National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 130-131
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. गोविंद जाधव
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय कलबुर्गी

Correspondence:
डॉ. गोविंद जाधव
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय कलबुर्गी

समकालीन हिंदी साहित्य के विविध अस्मितामूलक विमर्श: 21वीं सदी के उपन्यासों में वृद्ध विमर्श

डॉ. गोविंद जाधव

प्रस्तावना

समकालीन हिंदी साहित्य में अस्मितामूलक विमर्शों का दायरा लगातार विस्तृत हुआ है। स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी-विमर्श और पर्यावरण-विमर्श के साथ-साथ अब वृद्ध-विमर्श भी गंभीरता से उभर रहा है। बदलती सामाजिक संरचनाएँ, परिवार का विघटन, और भूमंडलीकरण की मार ने वृद्धजनों की स्थिति को गहरे संकट में डाल दिया है। उपन्यासकारों ने इस स्थिति को संवेदनात्मक रूप से रेखांकित किया है। डॉ. नामवर सिंह के शब्दों में— ***"साहित्य समाज का दर्पण नहीं, उसकी आत्मा है।"*** यह दृष्टि वृद्ध विमर्श को समझने का आधार प्रदान करती है।

बीज शब्द

समकालीन हिंदी साहित्य, अस्मिता विमर्श, वृद्ध विमर्श, उपन्यास, परिवार, एकाकीपन, वृद्धाश्रम, सामाजिक यथार्थ, सम्मान, गरिमा।

वृद्ध विमर्श का उद्भव और आवश्यकता

संयुक्त परिवारों की परंपरा ने भारतीय समाज में वृद्धजनों को हमेशा सम्मान दिया, किंतु 21वीं सदी में यह स्थिति तेजी से बदली है। अब वृद्धजन कई बार उपेक्षा, एकाकीपन और सामाजिक विस्थापन के शिकार होते हैं। चित्रा मुद्गल अपने उपन्यास **"पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा"** में लिखती हैं—

"घर में बाप के लिए जगह नहीं बची, उसकी मेहनत की कमाई से बने कमरे में भी उसे अपना कोना नहीं मिलता।"

यह कथन वृद्ध विमर्श की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

चित्रा मुद्गल की रचना 'गिलिगडू' में दो सेवानिवृत्त वृद्धों की तेरह दिन की कहानी में उनकी वृद्धावस्था के अकेलेपन पारिवारिक, त्रास, नई पीढी, नाती-पोते से मोह अपने अरमानों को पूरा न कर पाने की विवशता आदि का चित्रण किया है। इस उपन्यास में जसवन्त सिंह तथा कर्नल स्वामी है। कैसे नौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों का घर में सम्मान न देते हुए अकेला छोड़ देते हैं यह कृति इस विश्वास को और भी गहरा करती है कि साहित्यिक मूल्यों में सामाजिक सार्थकता का महत्व हमेशा बना रहे।

हृदयेश अपने उपन्यास 'चार दरवेश' में वृद्धों का सजीव चित्रण किया है। ऐसा लगता है मानों ये बुजुर्ग हमारे ही आस पडोस से उठकर कथा-पात्रों की भूमिका निभा रही है। इस उपन्यास को उन्होंने चार वृद्धों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। वह चार वृद्ध चित्ताहरण शर्मा, रामप्रसाद, शिवशंकर तथा दिलीपचन्द वे सभी अपने परिवार के साथ रह रहे हैं। परंतु उनसे उन्हें काफी शिकायतें है, वे कभी उन शिकायतों को किसी पार्क में बैठकर, तो कभी पुल पर बैठकर एक दूसरे के सामने अपनी भावनाओं को बयान करते हैं।

किसी को बेटी-दामाद से शिकायत, कभी तो किसी को अपने बेटे-बहू से, किसी को नाती-पोतों से। ये शिकायतें पीढ़ी-अंतराल के कारण मूल्य स्तर पर है, तो कभी परिवार से मिलने वाली दुर्व्यवहार के

कारण उन सब वृद्धों पर शोषण को देख सकते है। वृद्धावस्था में मनुष्य का शरीर नियंत्रण से बाहर हो जाता है। रामप्रसाद बूढे हो गए हैं। पेशाब का नियंत्रण में न रहने के कारण उनके शरीर की एक विवशता है। उसके कारण उन्हें अपनी बेटी के सामने जलील होना पडता है। दामाद के द्वारा तरह-तरह के मानसिक कष्ट को सहना पड़ता है।

इसी प्रकार चिन्ताहरण, दिलीपचन्द तथा शिवशंकर को भी अपने-अपने परिवार से किसी-न-किसी रूप में शिकायतें है। वे सभी सूखे नाले की पुलिया पर बैठकर सुलझाते-बुझाते रहते हैं।

21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श

- **संजय खत्री का उपन्यास "अंधेरी गुफा के लोग"** वृद्धाश्रमों की त्रासदी और वृद्धावस्था के अकेलेपन को चित्रित करता है।
- **चित्रा मुद्गल** के लेखन में बदलते पारिवारिक मूल्य और वृद्धजन की अस्मिता बार-बार प्रकट होती है।
- **प्रमोद कश्यप का "घर का आदमी"** वृद्ध की स्थिति और परिवार के भीतर उसकी अस्मिता के प्रश्न को उठाता है।
- **अल्पना मिश्र** के उपन्यास **"अन्हियारे तलछट में चमक"** में वृद्ध महिला पात्रों का संघर्ष और आत्मसम्मान रेखांकित होता है।
- **महुआ माजी** के **"मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ"** में भी वृद्ध पात्र सामाजिक हाशिये पर दिखाई देते हैं।

इन उपन्यासों में वृद्धावस्था केवल जैविक या व्यक्तिगत समस्या नहीं बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ और अस्मिता का प्रश्न बन जाती है।

वृद्ध विमर्श और अस्मिता

वृद्ध विमर्श अस्मिता विमर्श का अभिन्न हिस्सा है। जिस प्रकार स्त्री, दलित या आदिवासी अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ते हैं, उसी प्रकार वृद्धजन भी अपनी गरिमा और अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं। डॉ. रमेश उपाध्याय का कथन है—

"बुज़ुर्गों का अनुभव समाज की पूँजी है, यदि उसे उपेक्षित किया गया तो समाज की स्मृति और चेतना दोनों ही दरिद्र हो जाएँगी।"

हिन्दी साहित्य की प्रमुख कवयित्री ममता कालिया ने अपने 'दौड़' उपन्यास में उन वृद्धावस्था की समस्या का खूलकर चित्रण किया है, पवन घर से दूर अहमदाबाद में नौकरी के लिए जाने की बात घर में बताता है तब माँ-बाप नाराज हो जाते हैं, वह चाहते थे कि पवन वहीं उनके पास रहकर नौकरी करें। पवन उनसे कहता है "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है, करियर महत्व है।

जो बच्चे बुढापे का सहारा होते है, परंतु विदेशी तथा अपने ही देश के महानगरों में गृहस्थी जमा लेने के कारण बुढापे में अपने बच्चों से वंचित होकर आज वृद्ध अकेलेपन का शिकार होकर जीवन जीने के लिए अभिशप्त हुए है। यहाँ तक की विदेश में रहनेवाली संतान उनके वृद्ध माता-पिता के अंतिम संस्कार में नहीं पहुँच पाते। आज के युवा वर्ग अपने सम्पूर्ण समय काम में लग जाते हैं और वृद्ध माता-पिता पर ध्यान नहीं देते।

प्रमुख कथाकार सर्वेशवर दयाल सक्सेना की कविता 'सूखे पीले पत्तों ने कहा' इसमें उन्होंने युवा वर्ग और बुजुर्गों की तुलना की है। तेजी से जाती हुई कार इसका प्रतिक समाज के युवा वर्ग को दर्शाया गया है। कार के पीछे दौडने वाले सुखे पीले पत्ते समाज के बुजुर्ग या अनुभवी वर्ग का प्रतिक कहते हैं। आजकल युवा वर्ग समाज में आगे बढ़ रहे हैं, मगर वह बुजुर्गों के अनुभव के आधार पर आगे बड़े तो समाज का, देश का, उद्धार हो सकता है।

पीले पत्ते इसका मतलब बुजुर्गों के अंदर ताकत कम हो गई है, मगर उनके अनुभव को लेकर हमें आगे बढ़ना। आजकल के युवा वर्ग, वृद्धों / बुजुर्गों को अनदेखा करते हैं और उनका सम्मान नहीं करते हैं।

निष्कर्ष

21वीं सदी का हिंदी उपन्यास वृद्ध विमर्श को सामाजिक समस्या, सांस्कृतिक संकट और अस्मिता के प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करता है। वृद्ध विमर्श केवल बुज़ुर्गों की पीड़ा का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह हमें यह सोचने पर विवश करता है कि समाज की पहचान और परंपरा बुज़ुर्गों के अनुभव और मार्गदर्शन से ही सुरक्षित रह सकती है।

संदर्भ सूची

1. मुद्गल, चित्रा. *पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2006।
2. खत्री, संजय. *अंधेरी गुफा के लोग*. दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2012।
3. कश्यप, प्रमोद. *घर का आदमी*. दिल्ली: साहित्य अकादमी, 2015।
4. मिश्र, अल्पना. *अन्हियारे तलछट में चमक*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2017।
5. माजी, महुआ. *मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2013।
6. उपाध्याय, रमेश. *समकालीन हिंदी उपन्यास और समाज*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010।
7. सिंह, नामवर. *छायावाद*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1985।